

Environmental studies

पर्यावरणीय अध्ययन



Environmental studies is a multidisciplinary academic field which systematically studies of **human interaction** with the **environment**

Environmental studies connects principles from the physical sciences, economics, and social sciences to address complex contemporary environmental issues.

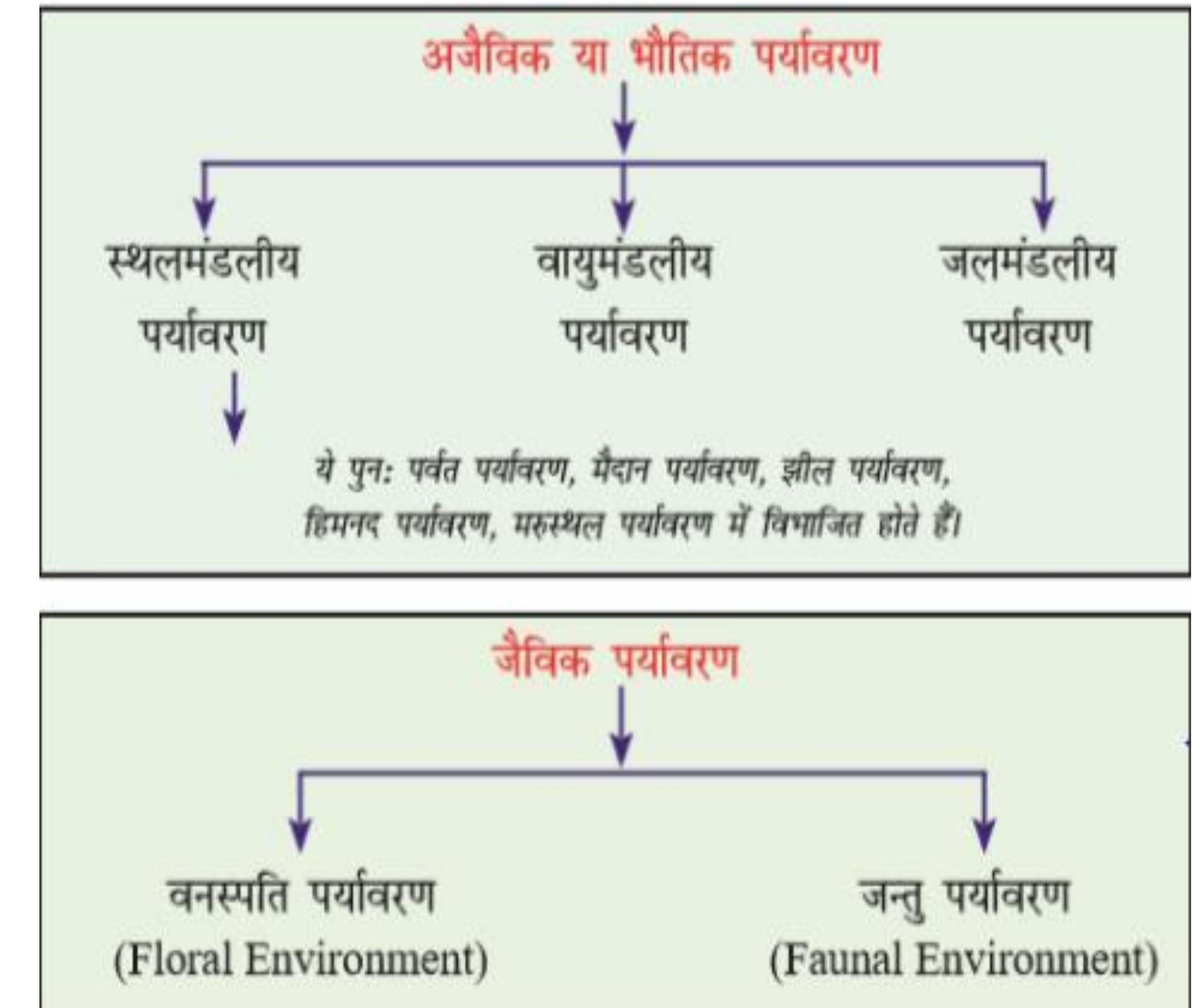
. It can be living (biotic) or non-living (abiotic) things. It includes **physical, chemical** and other natural forces.

Environment includes the living and nonliving things that an organism interacts with, or has an effect on it.

Living elements that an organism interacts with are known as biotic elements : animals, plants, etc., abiotic elements are non living things which include air, water, sunlight etc.

Studying the environment means studying the relationships among these various things.

In biology and ecology, the environment is all of the natural materials and living things, including [sunlight](#). If those things are natural, it is a natural environment.



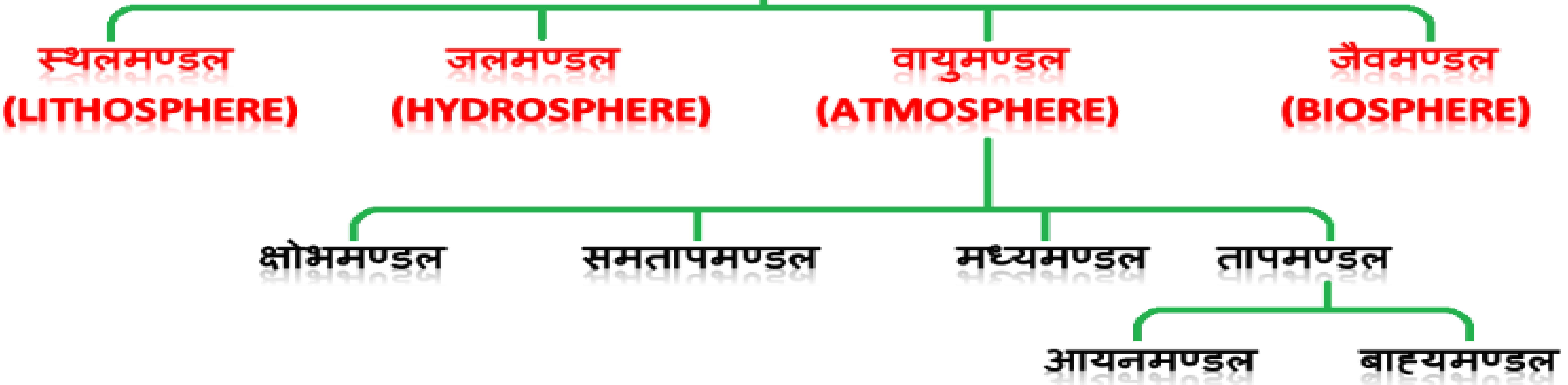
Environment शब्द फ्रेंच भाषा के 'Environner' शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ है- घिरा हुआ या घेरना। पर्यावरण शब्द का शाब्दिक अर्थ आस-पास, मानव, जन्तुओं या पौधों की वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाली बाह्य दशाएं, कार्य प्रणाली तथा जीवन-यापन की दशाएं आदि से होता है। पर्यावरण(संरक्षण) अधिनियम 1986 के अनुसार, पर्यावरण किसी जीव के चोरों तरफ घिरे भौतिक एवं जैविक दशाएं एवं उनके साथ अंतः क्रिया को सम्मिलित करता है।

पर्यावरण के कुछ कारक संसाधन के रूप में कार्य करते हैं। जबकि दूसरे कारक नियन्त्रक का कार्य करते हैं। कुछ विद्वानों ने पर्यावरण को मिल्यु (Milieu) से भी सम्बोधित किया है, जिसका अर्थ चारों ओर के वातावरण का समूह होता है।

पर्यावरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- › जैविक एवं अजैविक तत्त्वों के योग को पर्यावरण कहते हैं।
- › जैविक विविधता (Biodiversity), प्राकृतिक वास तथा ऊर्जा (Energy) किसी पर्यावरण के मध्य तत्व होते हैं। पर्यावरण में समय तथा स्थान के साथ परिवर्तन होता रहता है।
- › पर्यावरण जैविक एवं अजैविक पदार्थों के कार्यात्मक (Functional) सम्बन्ध पर आधारित होता है।
- › पर्यावरण की कार्यात्मकता (Functioning) ऊर्जा संचार पर निर्भर करती है।
- › पर्यावरण अपने जैविक पदार्थों (Organic Matter) का उत्पादन करता है, जो विभिन्न स्थानों पर अलग अलग होता है। पर्यावरण सामान्यतः परिस्थिति का सन्तुलन स्थापित करने की ओर अग्रसर रहता है।
- › पर्यावरण एक बन्द तंत्र है। इसके अन्तर्गत प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र स्वतः नियन्त्रक क्रियाविधि जिसे होमियोस्टेटिक क्रियाविधि (Homeostatic Mechanism) कहते हैं, के द्वारा नियन्त्रित होता है।

पर्यावरण



जैविक घटक

पर्यावरण के जैविक घटकों के अंतर्गत पौधों, प्राणियों (मानव, जंतु, परजीवी, सूक्ष्मजीव आदि) एवं अवघटकों (Decomposer) को शामिल किया जाता है। पारितंत्र के जैविकीय घटक अजैविक पृष्ठभूमि में परस्पर क्रिया करते हैं और इनमें प्राथमिक उत्पादक (स्वपोषी) एवं उपभोक्ता (परपोषी) आते हैं।

1. प्राथमिक उत्पादक (Primary Producers)

प्राथमिक उत्पादक जीव, आधारभूत रूप में हरे पौधे, कुछ खास जीवाणु एवं शैवाल (Algae), जो सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में सरल अजैविक पदार्थों से अपना भोजन स्वयं बना सकते हैं। वे स्वपोषी (Autotroph) अथवा प्राथमिक उत्पादक (Primary Producers) कहलाते हैं।

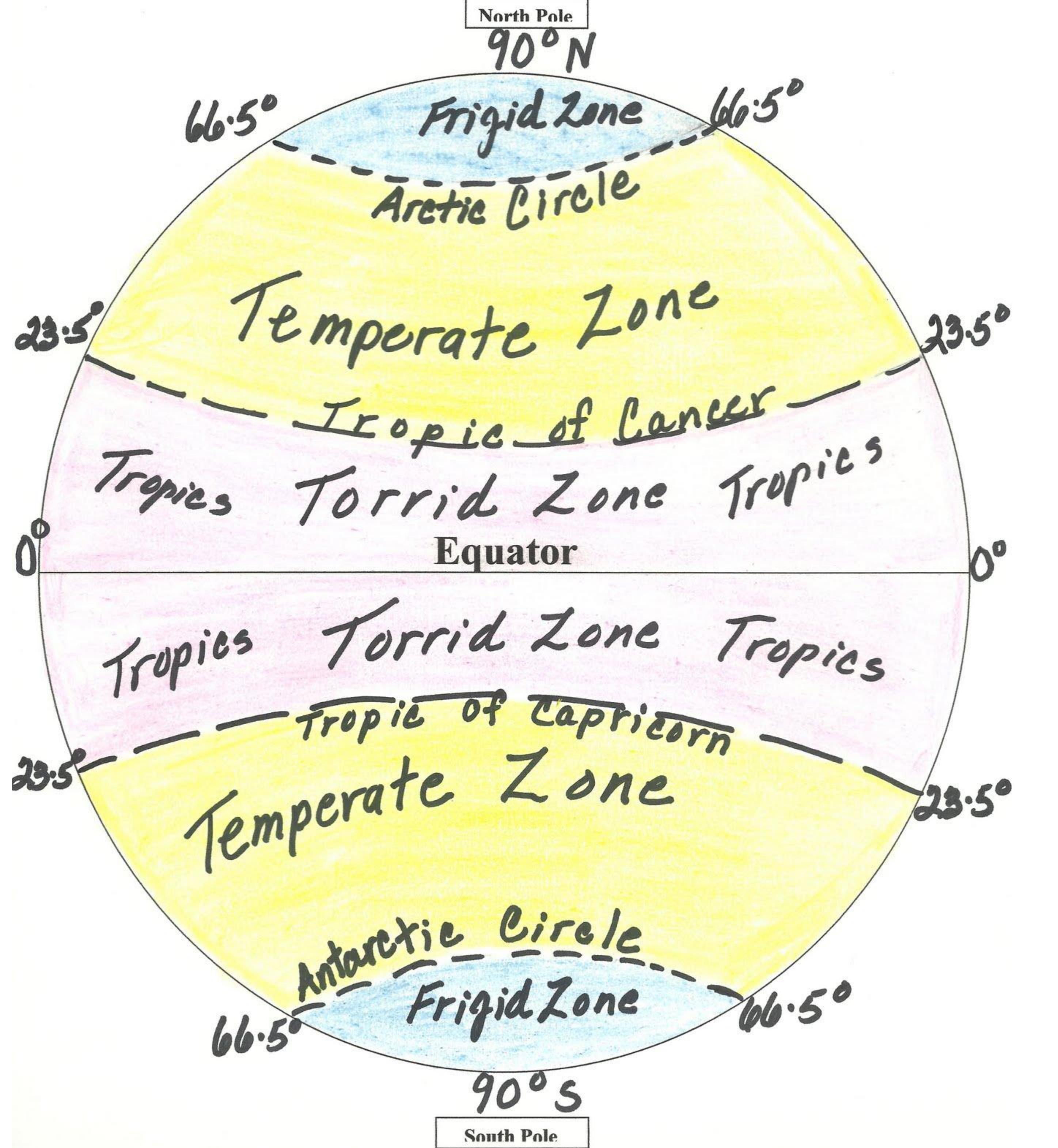
2. उपभोक्ता (Consumers)

उपभोक्ता वे जीव जो स्वयं अपना भोजन नहीं बना सकते एवं अन्य जीवों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं, उन्हें परपोषी (Heterotrophs) अथवा उपभोक्ता (Consumers) कहते हैं। इनके पुनः तीन उपवर्ग होते हैं

1. प्राथमिक उपभोक्ता - ये शाकाहारी (Herbivores) जन्तु होते हैं।
2. द्वितीयक उपभोक्ता - ये मांसाहारी (Carnivores) जन्तु होते हैं।
3. तृतीयक उपभोक्ता या सर्वाहारी (Omnivores) - इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से मनुष्य आता है, क्योंकि यह शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों को खाता है।

वियोजक या अपघटक (Decomposers)

वियोजक/अपघटक (Decomposers) ये सक्षमजीव होते हैं, जो मृत पौधों जन्तुओं तथा जैविक पदार्थों को वियोजित (सड़ाना-गलाना) करते हैं। इस क्रिया के दौरान ये अपना भोजन भी निर्मित करते हैं तथा जटिल कार्बनिक (जैविक) पदार्थ का एक-दूसर से पृथक कर उन्हें सामान्य बनाते हैं जिनका स्वपोषित, प्राथमिक उत्पादक हरे पौधे पनः उपयोग करते हैं। इनमें से अधिकांश जीव सुक्ष्म बैक्टीरिया तथा कवक (Fungi) के रूप में मृदा में रहते हैं।



पर्यावरण की संरचना

(i) स्थलमण्डल

पृथकी का लगभग 29% भाग स्थलमण्डल (Lithosphere) है, जो अधिकांश, जीव-जन्तुओं तथा पेड़-पौधों का सार है। इसमें पठार, मृदा, खनिज, पहाड़, चट्टानें आदि शामिल हैं। जीवों को स्थलमण्डल दो प्रकार से सहायता करता है। एक तरफ वे इन जीवों को आवास उपलब्ध कराते हैं, तो दूसरी तरफ जीव चाहे स्थलीय हो या जलीय, उसके लिए खनिज का स्रोत स्थलमण्डल ही होता है।

(ii) जलमण्डल

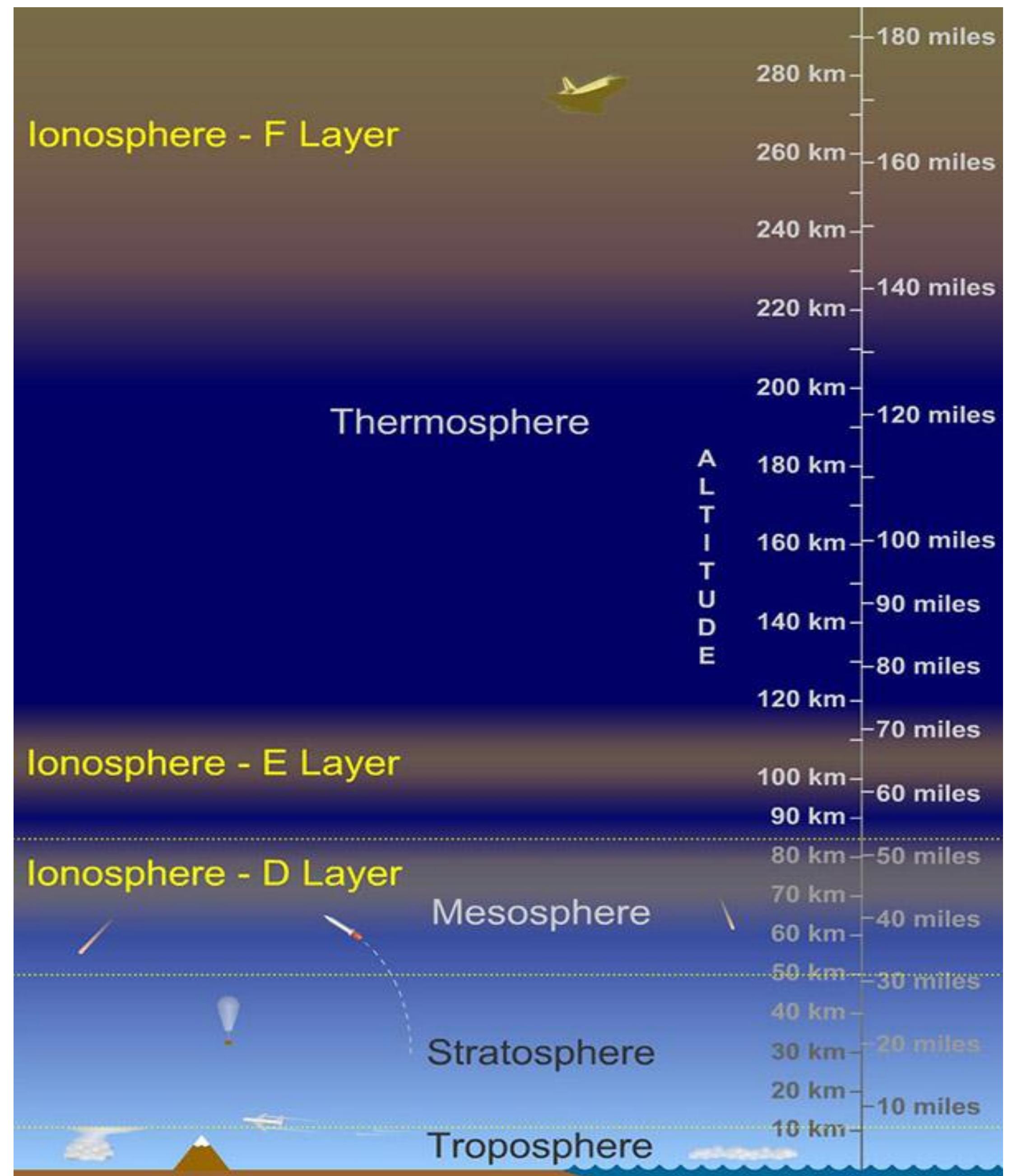
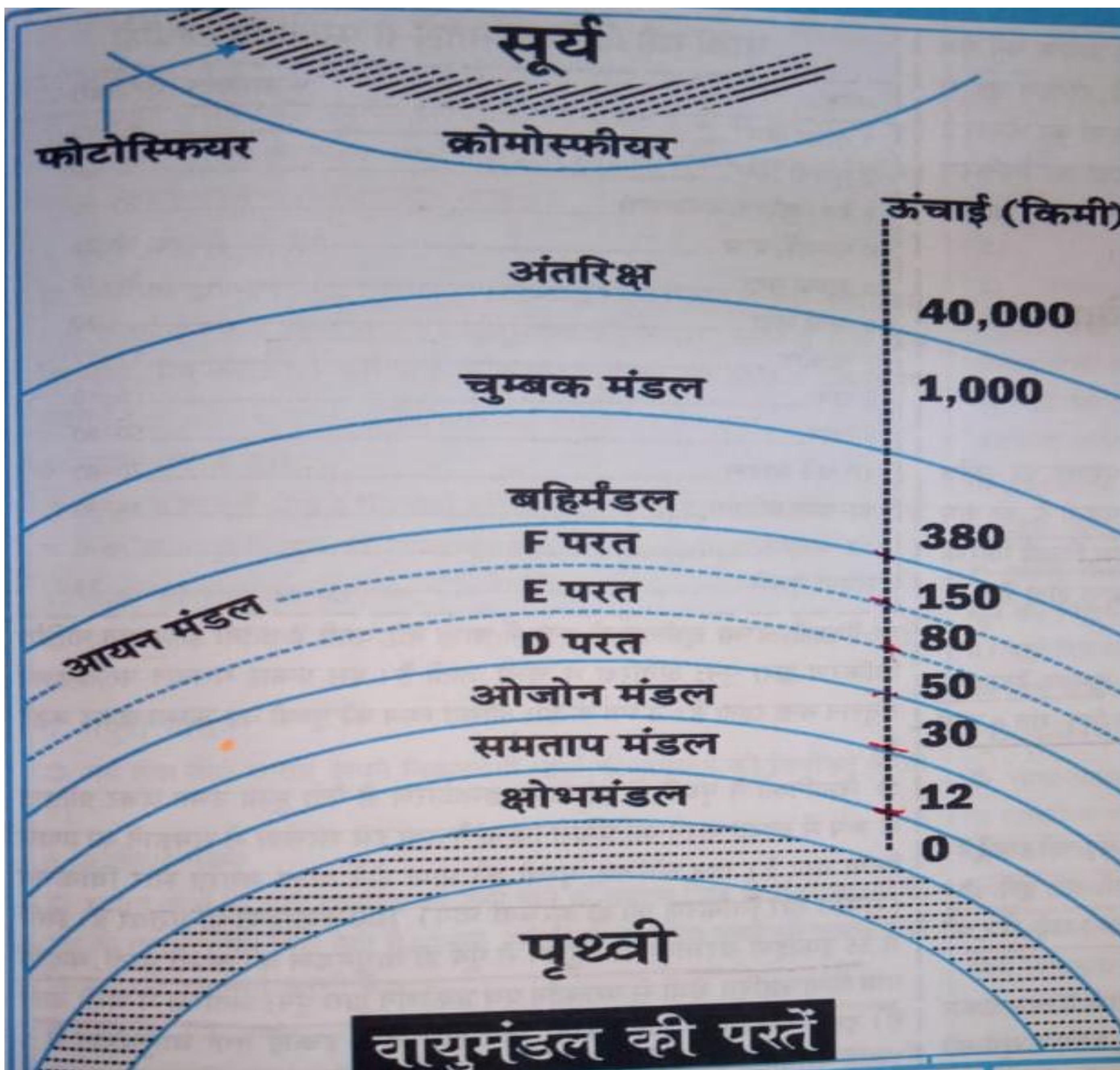
जलमण्डल (Hydrosphere) पर्यावरण का महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि यह पृथकी पर स्थलीय व जलीय जीवन को सम्भव बनाने वाला प्रमुख कारण है। जलमण्डल के अन्तर्गत धरातलीय व भूमिगत जल को सम्मिलित किया गया।

(iii) वायुमण्डल

वायुमण्डल (Atmosphere) जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। वायुमण्डल में विभिन्न प्रकार की गैसें पाई जाती हैं जिसमें ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाई-ऑक्साइड महत्वपूर्ण हैं।

नाइट्रोजन	78.8%
ऑक्सीजन	20.95%
ऑर्गन	0.93%
कार्बन डाइऑक्साइड	0.036%
नीऑन	0.002%
हीलियम	0.0005%
क्रिप्टोन	0.001%
जीनॉन	0.00009%
हाइड्रोजन	0.00005%

अक्रिय गैस



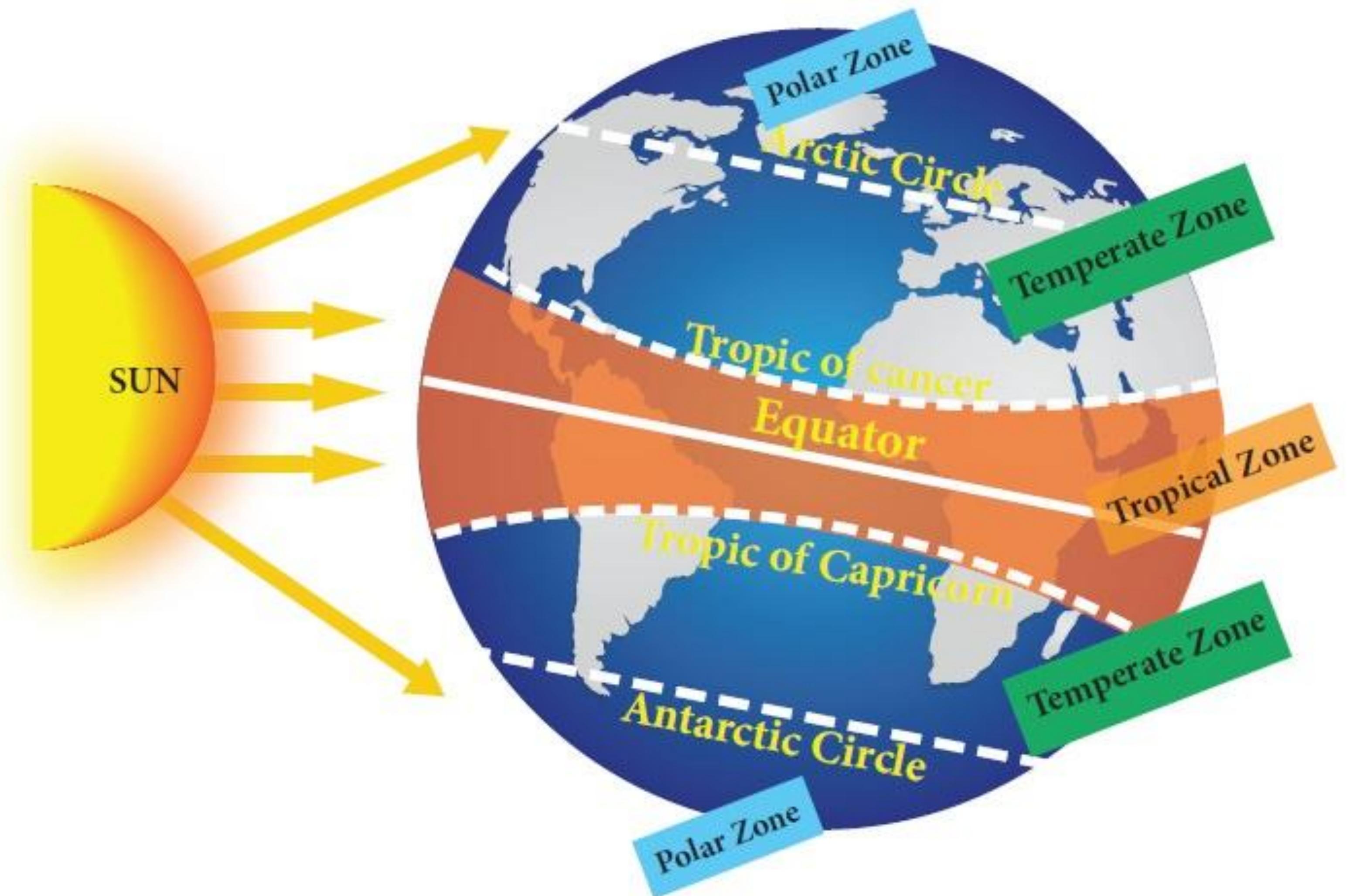


Figure 6.8 Heat Zones



CRACK करें CTET
सिर्फ ₹9,999/-
₹1,999/- में

60 DAYS | 100+ HOURS

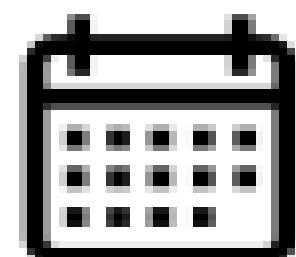
ENROLL NOW

 **SAFALTA.COM**
An Initiative by अमरउजाला

TARGET CTET 2020

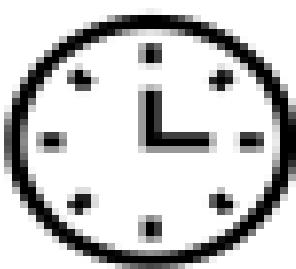
•LIVE

ONLINE
CLASSES



60

DAYS



100+

HOURS

PAPER 1 OR PAPER 2

COURSE FEE ₹9,999/-

22nd April

₹ 1,999/-

23-24th April

₹ 2,499/-

25-26th April

₹ 2,999/-

PAPER 1 + PAPER 2 (COMBO)

COURSE FEE ₹12,999/-

22nd April

₹ 2,499/-

23-24th April

₹ 2,999/-

25-26th April

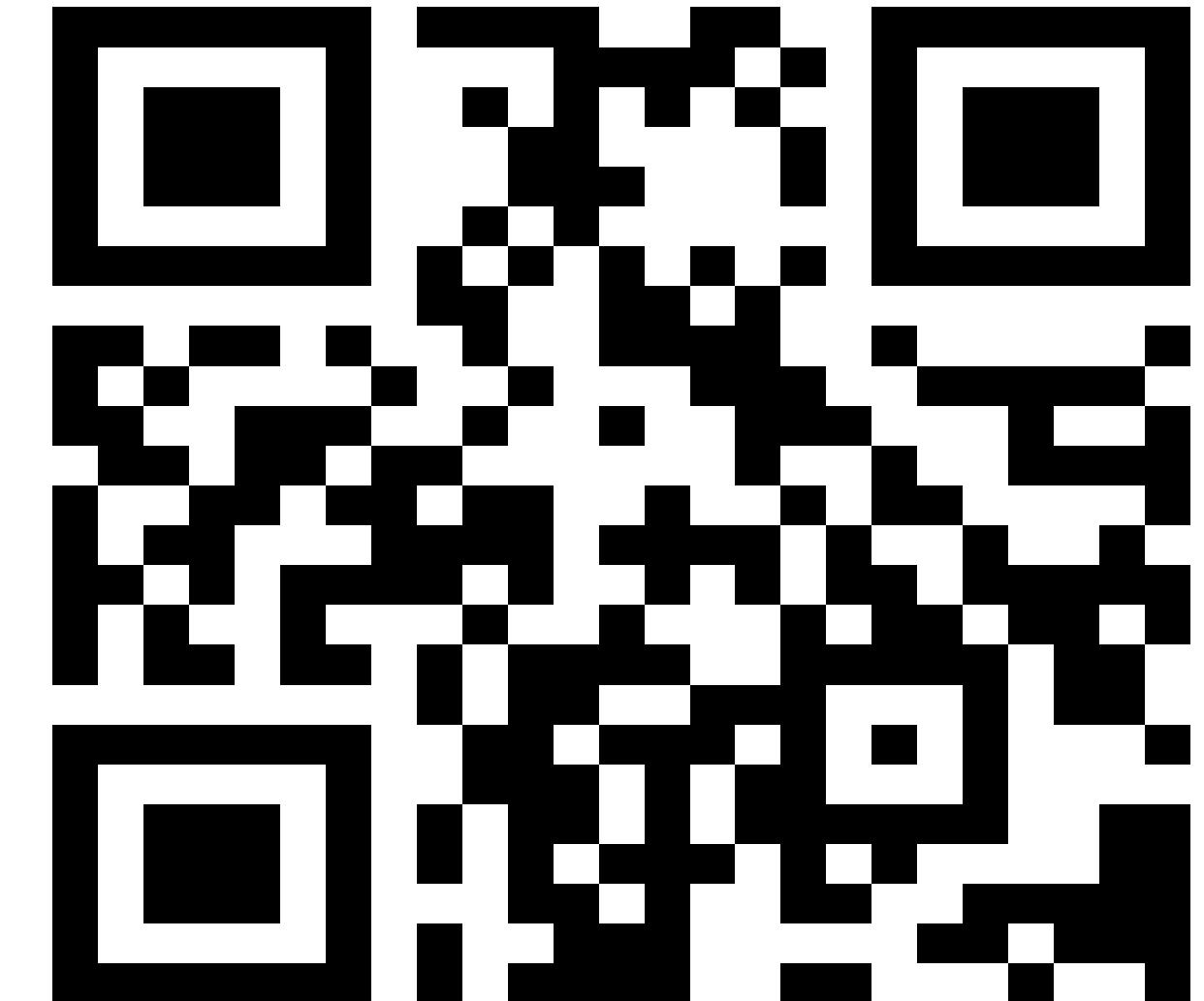
₹ 3,499/-

Course Benefits

- Live Interactive Classes on Zoom
- Accessible from Desktop or Mobile
- Access to recorded classes
- Weekly mock tests to evaluate progress
- PDF Study material to boost your preparation
- Special Q&A Sessions
- Daily Current Affairs
- Special Vocabulary Sessions
- Dedicated WhatsApp group

For more details follow the link or Scan
the QR Code

<https://bit.ly/3eHQDAq>



Our Faculties



MR. BHAGVATI SIR
Mathematics



MR. SANTOSH SIR
English



MR. MANISH SIR
Geography



MR. SUJEET SIR
History, Indian
Polity & Current
Affairs



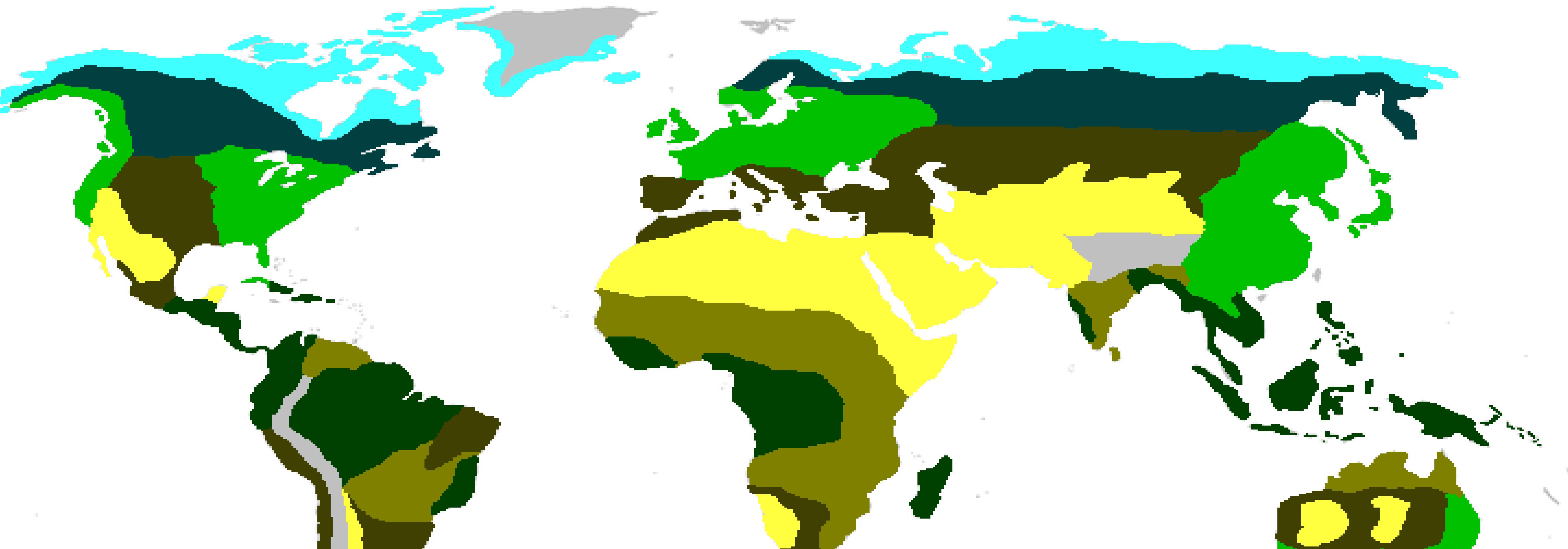
MS. PRIYA MA'AM
Physics &
Chemistry



MS. SABA MA'AM
Biology



MR. DESHRAJ SIR
Economics



Rainforest

Savanna

Desert

Temperate Forest

Grassland

Tundra

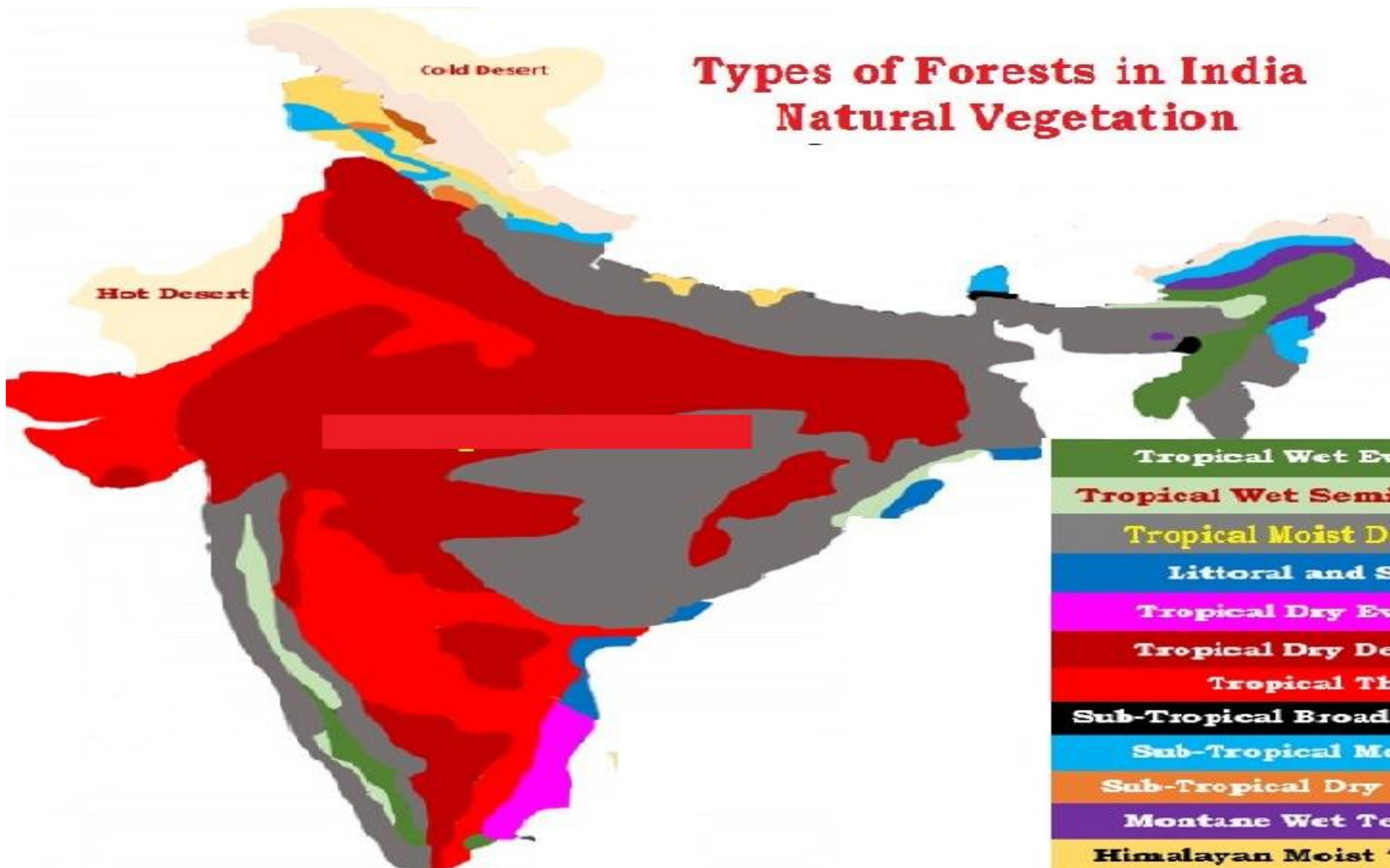
Taiga Forest

Copyright www.ducksters.com

Subscribe to our youtube channel for regular updates | www.youtube.com/safaltaclass

A **biome** is a community of plants and animals that have common characteristics for the environment they exist in. They can be found over a range of continents. Biomes are distinct biological communities that have formed in response to a shared physical climate.^{[1][2]} *Biome* is a broader term than habitat; any biome can comprise a variety of habitats.

Types of Forests in India Natural Vegetation



- Tropical Wet Evergreen
- Tropical Wet Semi-Evergreen
- Tropical Moist Deciduous
- Littoral and Swamp
- Tropical Dry Evergreen
- Tropical Dry Deciduous
- Tropical Thorn
- Sub-Tropical Broad Leaved Hill
- Sub-Tropical Moist Pine
- Sub-Tropical Dry Evergreen
- Montane Wet Temperate
- Himalayan Moist Temperate
- Himalayan Dry Temperate
- Sub-Alpine and Alpine

Natural Vegetation of India

India is bestowed with a wide range of flora and fauna. Due to a diverse geographical and climatic condition, an extensive range of natural vegetation grows in India.

Types of Natural Vegetation in India

(Vegetation Types of India)

Tropical Evergreen Rain Forests

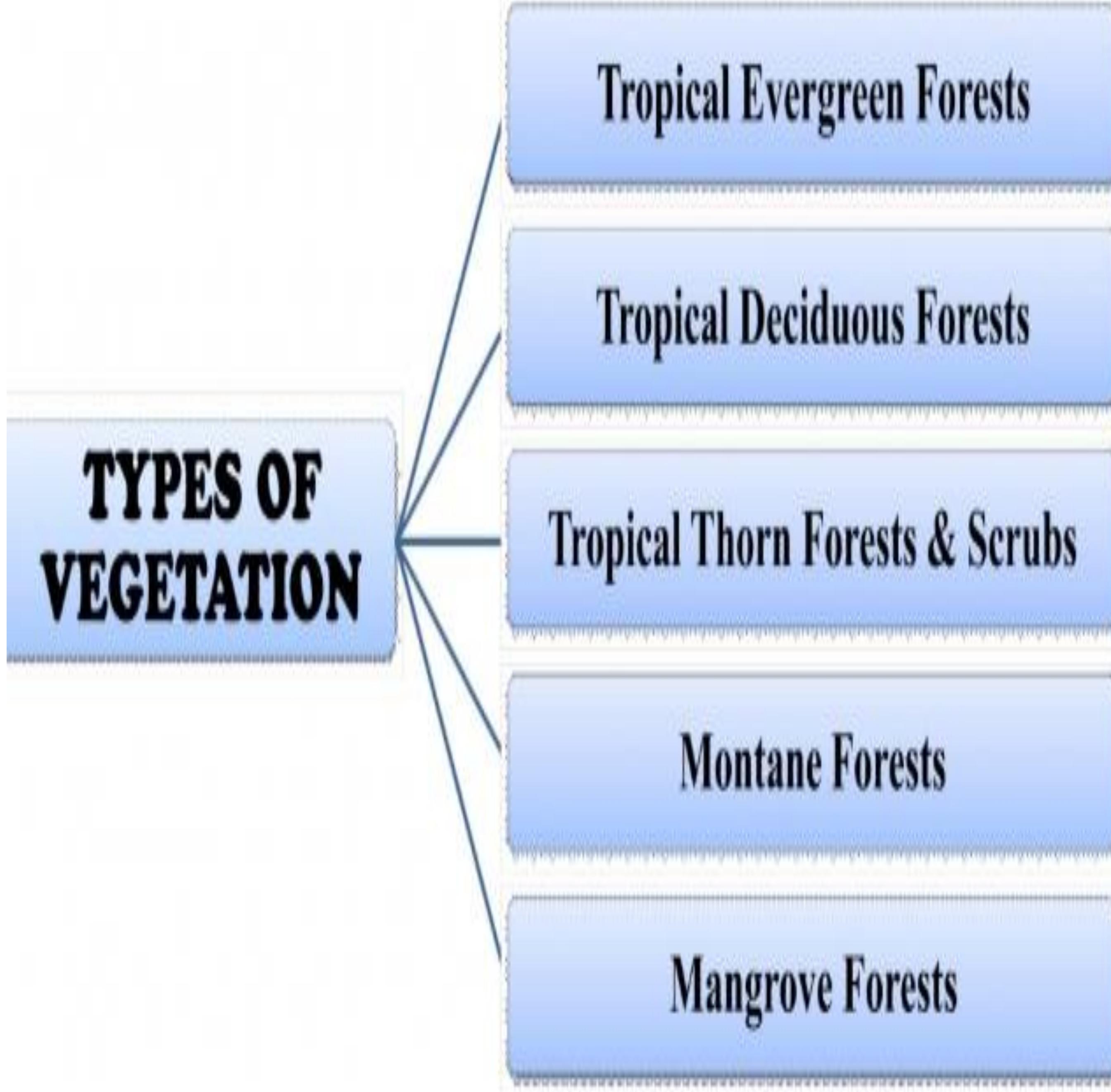
Deciduous or Monsoon Type of Forests

Dry Deciduous Forests

Mountain Forests

Tidal or Mangrove Forests

Semi-Desert and Desert Vegetations



- Teak is the most dominant species of this forest.
- Bamboos, sal, shisham, sandalwood, khair , kusum, arjun, mulberry are other commercially important species.

These forests are found in the rainier parts of the peninsular plateau and the plains of Bihar and Uttar Pradesh.

There are open stretches in which Teak, Sal, Peepal, and Neem grow.

भारत में 6,740 वर्ग किमी क्षेत्र में मैंग्रोव वन हैं। सुंदरवन डेल्टा, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तथा महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियों के डेल्टाई भाग में मैंग्रोव वन पाए जाते हैं।

व्याख्या

उष्ण कटिबंध : भूमध्य रेखा से ऊपर और नीचे दोनों ओर कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच का पृथ्वी का भाग। पृथ्वी का अपने अक्ष में झुके होने के कारण इस हिस्से में सूर्य की किरणें अधिक तिरछी नहीं हो पातीं। इस भाग के प्रत्येक स्थान पर सूर्य साल में एक बार अवश्य लंबवत् रहता है।

मैंग्रोव : ऐसे तटीय क्षेत्र होते हैं जहाँ नदियों का पानी समुद्र के खारे पानी से मिलता है और वहाँ अर्ध-खारे जल में विकसित होने वाली झाड़ियों और वृक्षों की बहुतायत होती है।

(1) -उष्णकटिबंधीय वर्षा वन -

ये वन पश्चिमी घाटों के अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों लक्ष्यदीप अंडमान और निकोबार दीप समूह, असम के ऊपरी भागों तथा तमिलनाडु के तट तक सीमित हैं।

ये उन क्षेत्रों में भलौ-भाँति विकसित हैं जहां 200 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा के साथ एक थोड़े समय के लिए शुष्क ऋतु पाए जाते हैं।

इन वनों में वृक्ष 60 मीटर या इससे अधिक ऊँचाई तक पहुंचते हैं क्योंकि ये क्षेत्र वर्ष भर गर्म तथा आर्द्ध रहते हैं, अतः यहां हर प्रकार की वनस्पति वृक्ष झाड़ियां वे लैताएं उठती हैं और वनों में इनकी विभिन्न ऊँचाइयाँ से कई स्तर देखने को मिलते हैं। वृक्षों में पतझड़ होने का कोई निश्चित समय नहीं होता अतः यह साल भर हरे-भरे लगते हैं।

इन वनों में सामान्य रूप से पाए जाने वाले जानवर -हाथी, बंदर, लैमूर और हिरण हैं। एक सींग वाले गैंडे असम और पश्चिम बंगाल के दलदली क्षेत्र में मिलते हैं।

इन वनों के व्यापारिक महत्व के कुछ वृक्ष - आबनूस, रोजवुड, रबड़ और सिंकोना हैं।

(2) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन-

ये भारत में सबसे बड़े क्षेत्र में फैले हुए वन हैं।

इन्हें मानसूनी वन भी कहते हैं।

ये उन क्षेत्रों में विस्तृत हैं जहां 70 सेंटीमीटर से 200 सेंटीमीटर तक वर्षा होती है।

इस प्रकार के वनों में वृक्ष शुष्क ग्रीष्म ऋतु में छह से आठ सप्ताह के लिए अपनी पत्तियां गिरा देते हैं।

जल की उपलब्धि के आधार पर इन वनों को **आर्द्ध तथा शुष्क पर्णपाती वनों** में विभाजित किया जाता है।



चित्र

उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन

(I)आर्द्र वन

जहां 100 सेंटीमीटर से 200 सेंटीमीटर तक वर्षा होती है

ऐसे वन देश के पूर्वी भागों उत्तरी पूर्वी राज्य, हिमालय के गिरीपद प्रदेशों, झारखण्ड, पश्चिमी उड़ीसा, छत्तीसगढ़ तथा पश्चिमी घाटों के पूर्वी ढालों में पाए जाते हैं।

सागोन इन वनों की सबसे प्रमुख प्रजाति है। बांस, साल शीशम, चंदन, रवैर, कुसुम, अर्जुन तथा शहतूत के वृक्ष व्यापारिक महत्व वाली प्रजातियां हैं।

(II)शुष्क पर्णपाती -

वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहां वर्षा 70 सेंटीमीटर से 100 सेंटीमीटर के बीच होती है।

ये वन प्रायद्वीपीय पठार के ऐसे वर्षा वाले क्षेत्रों उत्तर प्रदेश तथा बिहार के मैदानों में पाए जाते हैं। विस्तृत क्षेत्रों में प्राय सागोन, साल, पीपल तथा नीम के वृक्ष उठते हैं।

इन क्षेत्रों के बहुत बड़े भाग **कृषि कार्य में प्रयोग हेतु साफ** कर लिए गए हैं और कुछ भागों में पशु चारण भी होता है।

इन जंगलों में पाए जाने वाले जानवर प्राय सिंह, शेर, सुअर, हिरण और हाथी हैं।

Maximum deforestation

(3)कंटीले वन तथा झाड़ियां -

जिन क्षेत्रों में 70 सेंटीमीटर से कम वर्षा होती है वहाँ प्राकृतिक वनस्पति में कंटीले वन तथा झाड़ियां पाई जाती हैं।

इस प्रकार की वनस्पति देश की उत्तरी पश्चिमी भागों में पाई जाती है।

जिसमें गुजरात राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के अर्ध शुष्क क्षेत्र सम्मिलित हैं।

अकासिया, खजूर, यूफोरबिया तथा नागफनी यहाँ की मुख्य पादप प्रजातियां हैं।

इन वनों के वृक्ष बिखरे हए होते हैं, इनकी जड़ें लंबी तथा जल की तलाश में चारों ओर फैली होती हैं, पत्तियां प्राय छोटी होती हैं जिनसे वाष्पीकरण कम से कम हो सके।

शुष्क भागों में झाड़ियां और कटीले पादप पाए जाते हैं।

इन जंगलों में प्राय चूहे, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िए, शेर, सिंह, जंगली गधा, घोड़े तथा ऊंट पाए जाते हैं।

Montane forests



(4)पर्वतीय वन-

पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान की कमी तथा ऊँचाई के साथ साथ प्राकृतिक वनस्पति में भी अंतर दिखाई देता है।

वनस्पति में जिस प्रकार का अंतर हम उष्णकटिबंधीय प्रदेशों से टुंड्रा की ओर देखते हैं उसी प्रकार का अंतर पर्वतीय भागों में ऊँचाई के साथ साथ देखने को मिलता है।

1000 मीटर से 2000 मीटर तक की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में आर्द्ध शीतोष्ण कटिबंधीय वर्षावन पाए जाते हैं। इनमें चौड़ी पत्ती वाले ओक तथा चेस्टनट जैसे वृक्षों की प्रधानता होती है।

1500 से 3000 मीटर की ऊँचाई कैसे बीच शंकुधारी वृक्ष जैसे चीड़ देवदार ,सिल्वर फर ,स्प्रूस ,सीडर आदि पाए जाते हैं।

ये वन प्रायः हिमालय की दक्षिणी ढलानों, दक्षिण और उत्तर पूर्व भारत के अधिक ऊँचाई वाले भागों में पाए जाते हैं।

अधिक ऊँचाई पर प्राय शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान पाए जाते हैं।

प्राय 3600 मीटर से अधिक ऊंचाई पर स्थित शीतोष्ण कटिबंधीय वनों तथा घास के मैदानों का स्थान अल्पाइन वनस्पति ले लेती है।

सिल्वर फर ,जूनिफर ,पाइन ,बर्च इन वनों के मुख्य वृक्ष हैं।

जैसे-जैसे **हिम रेखा** के निकट पहुंचते हैं इन वृक्षों के आकार छोटे होते जाते हैं

अंततः झाड़ियों के रूप के बाद अल्पाइन वन घास के मैदानों में विलीन होते जाते हैं,

इनका उपयोग गुर्जर तथा बककरवाल जेसी धुमककड़ जातियां द्वारा पशु चारण के लिए किया जाता है अधिक ऊंचाई वाले भागों में मॉस, लिचन घास ,टुंड्रा वनस्पति का एक भाग है।

इन वनों में प्राय कश्मीरी महामृग ,चितरा, हिरण ,जंगली भेड़, खरगोश, तिष्णी बारहसिंघा ,याक ,हिम तेंदुआ ,गिलहरी, रिछ ,आईबैक्स ,कहीं-कहीं लाल पांडा, घने बालों वाली भेड़ ,तथा बकरियां पाई जाती हैं।

#5. Mangrove Forests:

- Found in the areas of coasts influenced by tides.
- Mud and silt get accumulated on such coasts.
- Dense mangroves are the common varieties with roots of the plants submerged under water.
- The deltas of the Ganga, the Mahanadi, the Krishna, the Godavari and the Kaveri are covered by such vegetation.
- In the Ganga Brahmaputra delta, sundari trees are found, which provide durable hard timber.
- Palm, coconut, keora, agar, also grow in some parts of the delta.



(5)मैंग्रोव वन-

यह वनस्पति तटवर्तीय क्षेत्रों में जहां जवाहर भाटा आते हैं
मिट्टी और बालू इन तटों पर एकत्रित हो जाती हैं,
घने मैंग्रोव एक प्रकार की वनस्पति है जिसमें पौधों की जड़े पानी में डूबी रहती है

गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों के डेल्टा भाग में यह वनस्पति
मिलती है।

गंगा ब्रह्मपुत्र डेल्टा में सुंदरी वृक्ष पाए जाते हैं जिनसे मजबूत लकड़ी प्राप्त होती है।

नारियल, ताढ़, क्योंडा व ऐंगोर के वृक्ष भी इन भागों में पाए जाते।

Boat Formation

Nearly 25 percent (one fourth) of India's total land area is now under forest and tree cover. However, there is still a long way to go – more than a decade, admits the government – before India reaches its target of having 33 percent of its total area under forest and tree cover.

The latest ['India State of Forest Report \(ISFR 2019\)](#) released by the country's environment minister Prakash Javadekar on December 30, 2019, revealed that the total forest and tree cover of the country is 807,276 square kilometres (which is 24.56 percent of the geographical area of the country) compared to 802,088 sq km (24.39 percent) in [ISFR 2017](#).

The report marked an increase of 5,188 sq. km. of forest and tree cover combined, at the national level, as compared to the previous assessment.

report highlighted a decrease in the forest area in the country's northeast region.



As per the ISFR 2019, the top five **states in terms of increase in forest cover** are Karnataka (1,025 sq. km.), Andhra Pradesh (990 sq. km.), Kerala (823 sq. km.), Jammu & Kashmir (371 sq. km.) Himachal Pradesh (334 sq km).

In **terms of area**,

Madhya Pradesh has the largest forest cover in the country

2. Arunachal Pradesh
- 3 Chhattisgarh
- 4 Odisha
- 5 Maharashtra.

In terms of forest cover as a percentage of their total geographical area, the top five states are

Mizoram (85.41 percent)

Arunachal Pradesh (79.63 percent)

Meghalaya (76.33 percent)

Manipur (75.46 percent)

Nagaland (75.31 percent).

mangrove cover in the country has increased by 54 sq. km. as compared to the previous assessment. The maximum increase was in Gujarat which recorded an increase of 37 sq. km followed by Maharashtra (16 sq. km.) Odisha

हाल ही में पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (The Ministry of Environment, Forest and Climate Change-MoEFCC) के अधीन एक संगठन भारतीय वन सर्वेक्षण (Forest Survey of India) द्वारा **भारत वन स्थिति रिपोर्ट-2019** (India State of Forest Report, 2019- ISFR, 2019) जारी की गई है।

मुख्य बिंदु:

वर्ष 1987 से भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट को द्विवार्षिक रूप से 'भारतीय वन सर्वेक्षण' द्वारा यह इस श्रेणी की 16वीं रिपोर्ट है।

इस रिपोर्ट में वन एवं वन संसाधनों के आकलन के लिये भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह रिसोर्स सेट-2 से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग

वर्तमान रिपोर्ट में 'वनों के प्रकार एवं जैव विविधता' (Forest Types and Biodiversity) नामक एक नए अध्याय को जोड़ा गया है, इसके अंतर्गत वृक्षों की प्रजातियों को 16 मुख्य वर्गों में विभाजित करके उनका 'चैंपियन एवं सेठ वर्गीकरण' (Champion & Seth Classification) के आधार पर आकलन किया जाएगा।

ISFR, 2019 से संबंधित प्रमुख तथ्य:

देश में वनों एवं वृक्षों से आच्छादित कुल क्षेत्रफल	8,07,276 वर्ग किमी. (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.56%)
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का वनावरण क्षेत्र	7,12,249 वर्ग किमी. (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 21.67%)
कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का वृक्षावरण क्षेत्र	95,027 वर्ग किमी. (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.89%)
वनाच्छादित क्षेत्रफल में वृद्धि	3,976 वर्ग किमी. (0.56%)
वृक्षों से आच्छादित क्षेत्रफल में वृद्धि	1,212 वर्ग किमी. (1.29%)
वनावरण और वृक्षावरण क्षेत्रफल में कुल वृद्धि	5,188 वर्ग किमी. (0.65%)

सर्वाधिक बनावरण प्रतिशत वाले राज्य:

मिज़ोरम	85.41%
अरुणाचल प्रदेश	79.63%
मेघालय	76.33%
मणिपुर	75.46%
नगालैंड	75.31%

सर्वाधिक बन क्षेत्रफल वाले राज्य:

मध्य प्रदेश	77,482 वर्ग किमी.
अरुणाचल प्रदेश	66,688 वर्ग किमी.
छत्तीसगढ़	55,611 वर्ग किमी.
ओडिशा	51,619 वर्ग किमी.
महाराष्ट्र	50,778 वर्ग किमी.



कर्नाटक

आंध्र प्रदेश

केरल

जम्मू-कश्मीर

हिमाचल प्रदेश

1. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार और अर्ध सदाबहार वन
 1. सदाबहार वन
 2. अर्द्ध सदाबहार वन
2. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
 1. आर्द्र पर्णपाती वन
 2. शुष्क पर्णपाती वन
3. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
4. पर्वतीय वन
 1. उत्तरी पर्वतीय वन
 2. दक्षिणी पर्वतीय वन
5. वेलांचली व अनूप वन

